सर्वदर्शन संग्रह (चार्वाक दर्शन)

इकाई की रूपरेखा

भूमिका :

उद्देश्य :

4.3.1. चार्वाक और लोकायतिक नामकरण

4.3.2. तत्वमीमांसा - ईश्वर सम्बन्धी विचार

4.3.3. मोक्षा एवं आत्मा की अवधारणा

4.3.4. चार्वाक मत संग्रह

4.3.5. प्रमाण विचार - प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण

4.3.6. अनुमान प्रमाण का खंडन

4.3.7. शष्द प्रमाण का खंडन

4.3.8. लौकिक व्यवहार और वस्तुयें

4.3.9. चार्वाक मत सार

सारांश

शष्दावली

सूची प्रश्न

प्रदन्त कार्य

उपयोगी ग्रन्थ

यूनिट-तृतीय

भूमिका :

प्राचीन वर्गीकरण के अनुसार यदि हम भारतीय दर्शन का वर्गीकृत अध्ययन करना चाहें तो सम्पूर्ण भारतीय दर्शन को दो भागों में बाँटा जा सकता है-आस्तिक तथा नास्तिक। चार्वाक, जैन और बौद्ध ये तीन नास्तिक दर्शन है और न्याय, वैशेषिक सॉख्य, योग मीमांसा तथा वेदान्त आस्तिक दर्शन हैं। आस्तिकता और नास्तिकता के निर्धारण का आधार क्या है इस सम्बन्ध में दार्शनिक एक मत नहीं है। फिर भी यह मत लगभग सर्वमान्य है कि वेदों को प्रमाण मानने वाले आस्तिक हैं और वेदों को प्रमाण न मानने वाले नास्तिक। इस प्रकार चार्वाक नास्तिक दर्शन है।

चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है जिन विषयों का ज्ञान प्रत्यक्ष से नही हो सकता उनका कोई आस्तित्व नही है। इस प्रकार अनुमान और शब्द प्रमाण मान्य नहीं। चूँकि चार्वाक दर्शन प्रत्यक्षवादी है अतः जिन विषयों का ज्ञान प्रत्यक्ष से नही हो सकता उनका कोई आस्तित्व नहीं है। इस प्रकार आत्माद्ब ईश्वर, मोक्ष और परलोक जैसे चीजों का कोई आस्तित्व नही है। जीवन का उद्देश्य केवल वत्रमान जीवन मे अधिक से अधिक इन्द्रिय सुख की प्राप्ति है। इस प्रकार वत्रमान को सुखद बनाना ही नैतिक जीवन का आधार है। ईश्वर आत्मा, मोक्ष, परलोक या स्वर्ग सुख प्रलापमात्र है। संसार का निर्माण जड़ परमाणुओं के आकस्मिक संयोग से हुआ है। इस प्रकार सृष्टि निर्माण के लिये किसी सृष्टिकर्ता ईश्वर के आस्तित्व को स्वीकार नही किया जा सकता है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई में हम आपको भारतीय दर्शन के नास्तिक सम्प्रदाय के अन्तर्गत गिने जाने वाले जड़वादी दर्शन चार्वाक के बारे में जानकारी दे रहे है। प्रस्तुत इकाई में विविध उपशीर्षको के अन्तर्गत चार्वाक दर्शन की मान्यताओं और अवधारणओं का विस्तार पूर्वक विवेचन किया जायेगा। ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में

चार्वाक प्रत्यक्षवादी है इसलिये अनुमांन और शब्द प्रमाण का खंडन करता है। चार्वाक की तत्वमीमांसा उसकी ज्ञानमीमांसा पर आधारित है। अपनी ज्ञानमीमांसा के आलोक में वह ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग आदि अतीन्द्रिय सन्ता का निषेध कर जाता है। इन सभी तथ्यों पर इस इकाई में विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा। इस प्रकार इस इकाई का अध्ययन करके आप चार्वाक दर्शन के विविध पक्षों- ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा, नीतिमीमांसा के बारे मे सुगमतापूर्वक गहन जानकारी प्रात्त कर सकते है।

NOTES

4.3.1 चार्वाक और लोकायतिक नामकरण

इस दर्शन का नाम चार्वाक और लोकायतिक क्यों पड़ा इस सम्बन्ध में दार्शनिकों के अपने-अपने विचार है। ऐतिहासिक दृष्टि से कहा जाता है कि इस दर्शन के प्रथम आचार्य चार्वाक हुये अतः चार्वाक द्वारा प्रवत्रित होने के कारण यह दर्शन चार्वाक कहलाया। एक दूसरे मत के अनुसार चार्वाक शब्द चारू+वाक् से बना है। चारु का तात्पर्य सुन्दर से है और वाक् का अर्थ वाणी से है। इस प्रकार चार्वाक का शाब्दिक अर्थ सुन्दर वाणी से है चूँकि यह दर्शन खाने-पीने पर अधिक जोर देता है इसके उपदेश सुनने में बड़े मीठे लगते है जब तक जीओ सुख से जिओ कर्ज करके घी पीओ। कामनाओं की सुन्तुष्टि ही एकमात्र पुरुषार्थ है। इसलिये भी यह दर्शन चार्वाक कहलाया। कुछ लोगों का कहना है कि चार्वाक शब्द चर्व धातु से बना है जिसका अर्थ है भोजन करना इसका व्यंग्यार्थ है चबा जाना। प्रथम भोजन अर्थ में। चार्वाक दार्शनिकों मे भोज, पान, भौम इत्यादि का पूरा उपदेश दिया है अतः चार्वाक नाम 'यथा नामों तथा गुण के अनुरूप है। दूसरा व्यंग्यार्थ में चार्वाक के अनुयायी पाप, पुण्य, परोक्ष परलोक आदि को चबा जाते है अर्थात् नही मानते इसी कारण वे चार्वाक कहलाये।

जहाँ तक लोकायत नामकरण का प्रश्न है, प्रत्यक्ष परिदृश्यमान इस लोक में सर्वाधिक प्रसार के कारण ही इस दर्शन का नाम लोकायत दर्शन भी पड़ा। चार्वाक दर्शन वैदिक सिद्धान्तों को स्वीकार नही करता यहाँ तक कि दुष्ट चार्वाक

NOTES

वेदों की निन्दा भी करते हैं। अवएव यह नास्तिक दर्शन कहलाता है। चार्वाक में परमतत्व जड़ माना गया है। जड़तत्वों की संख्या चार-पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु मानी गयी है। अतः इस दर्शन को जड़वादी या भौतिकवादी दर्शन कहा जाता है। जड़ परमाणुओं के आकस्मिक संयोग या उनके स्वभावतः मिलन से सांसारिक पदार्थों/सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। अतः इनका सृष्टि सम्बन्धी विचार स्वभाववाद भी कहलाता है। लोकायत नामकरण के पक्ष मे कुछ अन्य दृष्टांत भी उपलब्ध होते है शंकराचार्य के अनुसार देह से भिन्न आत्मा की सत्ता नहीं मानने वाले लोकायत है। हरिभद्र सूरि के षड्दर्शन समुच्चय में चार्वाक के लिये लोकायत शब्द का ही प्रयोग किया गया है। श्री वाचस्पति मिश्र ने अनुमान को अप्रमाण मानने वालों को लोकयविक कहा है। वात्स्यायन ने भी चार्वाक के लिये लोकायत शब्द का ही प्रयोग किया है। इन उदारणों से यह सिद्ध है कि चार्वाक दर्शन का दूसरा नाम लोकायत है तथा इस दर्शन के मानने वालों के लोकायतिक कहते है।

4.3.2 तत्वमीमांसा-ईश्वर सम्बंधी विचार

विश्व के मूलतत्वों के सम्बन्ध मे चार्वाकों का मत उनके प्रमाण सम्बन्धी विचारों पर अवलम्बित है। चार्वाक चूँकि प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते है अतः वे उन्ही तत्वों की सत्ता स्वीकार करते हैं जिनका प्रत्यक्ष किया जा सकता है। चूँकि ईश्वर एक ऐसी सत्ता जिसका ज्ञान पंचज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से सम्भव नही है। अतः ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नही किया जा सकता हमें केवल जड़ द्रव्यों का ही प्रत्यक्ष होता है अतः हम केवल उन्ही को मान सकते है। इस प्रकार चार्वाक जड़वाद का प्रतिपादन करते है। इनके मत के अनुसार जड़ ही एकमात्र तत्व है। प्रायः ईश्वरवादी दर्शनों मे ईश्वर की सत्ता सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार की गयी है। अब यहाँ पर प्रश्न यह पैदा होता है कि यदि चार्वाक ईश्वर की सत्ता को नकार जाते हैं तो वे सृष्टि की व्याख्या कैसे करते है? प्रायः किसी कार्य की उत्पत्ति के लिये उपादान कारण और निमित्त कारण दोनों की आवश्यकता पड़ती है। यथा घड़े के निर्माण में मिट्टी उपादान कारण है और कुम्भकार घड़े का निमित्त कारण है। उसी तरहे से यदि चार्वाकों के इस मत को

स्वीकार भी कर लिया जाय कि जड़ परमाणु-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु सृष्टि के निर्माण में उपादान कारण के रूप में कार्य हैं तो भी इस प्रश्न का उत्तर अपेक्षित रह जाता है। कि आखिर सृष्टि के निर्माण में निमित्तकारण कौन है? व्यावहारिक अनुभव यह बतलाता है कि बिना निमित्त कारण के किसी कार्य की उत्पत्ति नही। आखिर जड़ परमाणुओं के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति कैसे होती है।

NOTES

इसके उत्तर में चार्वाक दार्शनिक कहते है कि सृष्टि के निर्माण के लिये निमित्त कारण के रूप में किसी ईश्वर की सत्ता को मानने की कोई आवश्यकता नही है। संसार का निर्माण जड़ परमाणुओं-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु के आकस्मिक संयोग से हुआ है। सृष्टि निर्माण के पीछे किसी उद्देश्यपरकता या प्रयोजनशीलता को मानना मूर्खता है। जड़तत्वों का स्वयं अपना-अपना स्वभाव है। अपने-अपने स्वभाव के अनुसार ही वे संयुक्त होते है और उनके स्वतः सम्मिश्रण से संसार की उत्पत्ति होती है। इसके लिये ईश्वर की आवश्यकता नही है।

"लोक सिद्धा राजा परमेश्वर"

संसार में स्वीकृत राजा ही परमेश्वर है। संसार का नियत्ता, उत्पत्ति, पालन और संहारकर्ता, पुनर्जन्म का प्रदाता ईश्वर नही क्योंकि उत्पत्ति आदि तो स्वाभाविक है। पुनर्जन्म है ही नही। चूँकि चार्वाक पुनर्जन्म को नही मानते अतः कर्मफल अधिष्ठाता के रूप में भी ईश्वर की सत्ता को मानने की कोई आवश्यकता नही है। सृष्टि के सम्बन्ध में चार्वाकों का मत 'स्वभाववाद' या यदृच्छावाद कहलाता है। वस्तुतः जड़भूतों के अतंर्निहित स्वभाव से ही जगत की उत्पत्ति होती है संसार तो जड़तत्वों का आकस्मिक संयोग है।

4.3.3 मोक्ष एवं आत्मा की अवधारणा

आस्तिक दर्शनों मे आत्मा को शरीर से भिन्न, नित्य और अपरिणामी माना गया है। जन्म, मरण आदि शरीर के धर्म हैं आत्मा के नही। इस प्रकार आत्मा शरीर से भिन्न है। चार्वाक दर्शन में आत्मा के नित्य स्वरूप का पूर्णतः निषेध किया गया है तथा आत्मा को शरीरादि से पृथक् नही माना गया है।

NOTES

अब यहाँ पर प्रश्न यह पैदा यदि होता है कि यदि केवल जड़ परमाणुओं की ही सत्ता है और आत्मा तथा ईश्वर नाम की कोई सत्ता नही है तो चैतन्य की व्याख्या कैसे की जा सकती है? चैतन्य को तो हम नकार नहीं सकते। चार्वाक स्वीकार करते हैं कि चैतन्य का ज्ञान प्रत्यक्ष के द्वारा होता है किन्तु वे यह नही मानते कि चैतन्य किसी अभौतिक तत्व अर्थात आत्मा का गुण है। आत्मा का तो कभी प्रत्यक्ष होता ही नही है। जड़तत्वों से बने जो हमारे शरीर है केवल उन्ही का तो प्रत्यक्ष होता है। चैतन्य हमारे शरीर के अन्तर्गत है इसलिये शरीर का ही गुण चैतन्य को मानना चाहिये। चैतन्य शरीर को ही आत्मा मानना चाहिये। ''चैतन्य विशिष्टों देह एव आत्मा।'' आत्मा और शरीर के तादात्म्य का ज्ञान दैनिक अनुभवों से भी प्रात्त होता है। 'मैं मोटा हूँ', 'मै लँगड़ा हूँ', मै अंधा हूँ ये वाक्य आत्मा और शरीर की एकता को ही प्रमाणित करते है। यदि आत्मा शरीर से भिन्न हो तो इन वाक्यों का कोई अर्थ नही रह जाता।

यहाँ पर पुनः यह प्रश्न विचारणीय है कि यदि चार्वाकों को इस विचार को इस विचार को स्वीकार कर लिया जाय कि संसार का निर्माण जड़ परमाणुओं के आकस्मिक संयोग से हुआ है तो प्रश्न पैदा होता है कि फिर चेतना और उसकी उत्पत्ति की व्याख्या हम कैसे करेगें? मूल परमाणुओं मे तो चेतना पायी नही जाती क्योकि वे जड़ तो फिर जिस चेतना का हमें प्रत्यक्ष होता है उसकी व्याख्या कैसे? चार्वाक कहते हैं कि जड़ परमाणुओं के आकस्मिक संयोग से जागतिक पदार्थों की उत्पत्ति होती है। यह संभव है कि तत्वों में यदि किसी गुण विशेष का अभाव भी रहे-तो उसकी उत्पत्ति उस निर्मित वस्तु से ही दी जा सकती है। अरे भाई! पान, चूना, सुपारी, में लाल रंग तो कही नही पाया जाता परन्तु जब उनको एक साथ मिलाकर खाया जाता है तो लाल रंग अपने आप पैदा हो जाता है। एक ही वस्तु को भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में रखने से भी उनमें नये-नये गुणों को आविर्भाव होता रहता है।

''जड़ भूत विकारेषु चैतन्यं यन्तु दृश्यते
ताम्बूलपूग चूर्णानां योगाद्राग इवोत्थितम्।।''

अर्थात जड़-पदार्थों के विकार से चैतन्य उसी प्रकार उत्पन्न होता है जैसे पान, सुपारी और चूने के योग से पान की लाली निकलती है। गुड़ में मादकता का अभाव है किन्तु गुड़ के सड़ जाने पर वह मादक हो जाता है। इसी प्रकार जड़ तत्वों का भी सम्मिश्रण यदि एक विशेष ढंग से हो तो शरीर की उत्पत्ति होती है और उसमें एक नये गुण चैतन्य का आविर्भाव होता है। शरीर से भिन्न आत्मा के आस्तित्व का कोई प्रमाण नही है।

NOTES

अब यह बात स्पष्ट हो गयी कि शरीर से भिन्न चेतन आत्मा का कोई आस्तित्व नही है ऐसी स्थिति में आत्मा की अमरता, अजरता और अविनाशत्व का कोई अर्थ नहीं। आत्मा की अमरता और अजरता की मान्यता मूर्ख पण्डितों का प्रलाप मात्र है।

तत्व मीमांसा से ही जुड़ा हुआ विषय स्वर्ग और मोक्ष की अवधारणा का है। मीमांसा दर्शन में मानव जीवन के चरम लक्ष्य के रूप में 'स्वर्ग' की अवधारणा को मान्यता दी गयी है। ''स्वर्गकामो यजेत्'' यह मीमांसको का नारा है। यदि मनुष्य इस जीवन मे यज्ञादि नैतिक कर्मों, दान आदि पुण्य कार्य करता है तो मरणोपरान्त उसे स्वर्ग प्रात्त होता है। स्वर्ग पूर्ण आनन्द की अवस्था है। वहाँ जरा, जन्म, रोग आदि का भय नही है। इसलिये स्वर्ग की अभिलाषा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को वैदिक आचारों का पालन करना चाहिये। चार्वाक के अनुसार स्वर्ग की सत्ता ही नही है अतः स्वर्ग सुख की कल्यना मिथ्या कल्पना है।

किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति को वत्रमान जीवन में इसलिये कष्ट नही उठाना चाहिये कि भविष्य में उसे सुख मिलेगा। ऐहिक सुख का त्याग कर परलोक के सुख के लिये यत्न करना तो हस्तगत अवलेह का त्याग कर कोहनी को चारना है।

''न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः
नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकः
अग्निहोत्रं त्रयोवेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम
बुद्धि पौरुष हीनानां जीवकेति वृहस्पतिः
त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्ड धूत्र निशाचराः
जुर्भरी तुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतः''

NOTES

न कही स्वर्ग है और न कोई मोक्ष है। न तो पारलौकिक आत्मा है और न वर्णाश्रम धर्म है। वर्णाश्रम धर्म और यज्ञादि कर्मकाण्ड का कोई फल नहीं। हवन करना, संन्यास धारण करना ललाट में भस्म धारण करना इत्यादि पुरुषार्थहीन व्यक्तियों के जीवनयापन के लिये बनाये गये है। तीनों वेदों के रचयिता तो भण्ड, धूत्र और निशाचर थे उन लोगों ने जुर्फरी, तुर्फरी आदि अप्रसिद्व वचनों से लोक को वन्चित किया है।

पुरोहितों का यदि वास्तविक विश्वास है कि यज्ञ में बलिदान किया हुआ पभु स्वर्ग पहुँच जाता है तो वे क्यों नही पशुओं के बदले माँ-बाप की बलि कर देते है ताकि वे स्वर्ग जा सकें।

पशुश्चेन्निहतः स्वर्ग ज्योतिष्टोमे गमिण्यति
स्वपिता यजमानेन तब कस्मान्न हिंस्यते''।।

इस प्रकार चार्वाक स्वर्ग को मिथ्या बतलाते हैं तथा स्वर्गीय सुख को कोरी कल्पना कहते हैं। यही संसार स्वर्ग है। इसमें आधिकाधिक स्वेच्छा से भोग करना ही स्वर्गीय सुख है तथा पीड़ा सहना ही नरक है। षोडसी रमणी का संगम, सुन्दर वस्त्र, सुगन्धित माला का धारण, श्वेत चन्दन का अनुलेपन ही स्वर्ग सुख है।

इसी तरह चार्वाक मोक्ष की मान्यता का भी खण्डन करते हैं। पूर्ण दुःखनिवृत्ति ही मोक्ष है। इस सन्दर्भ मे कुछ दार्शनिक मतों के अनुसार वत्रमान काल मे ही शरीर के रहते मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है कुछ के अनुसार मोक्ष मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होता है। चार्वाक इनमें से किसी भी मत को स्वीकार नहीं करते। उनके मतानुसार यदि मोक्ष का अर्थ आत्मा का शारीरिक बन्धन से मुक्त होना है तो यह कदापि संभव नही है क्योकि अविनाशी आत्मा का आस्तित्व ही नही है। आत्मा की सत्ता ही नही है तो फिर मोक्ष किसका। जहाँ तक शरीर की बात है यह तो मृत्यु के साथ ही नष्ट हो जाती है। और यदि मोक्ष का अर्थ जीवन काल में दुःख निवृति लिया जाय तो यह भी संभव नही है। क्योकि शरीर धारण और सुख-दुःख मे अविच्छेद सम्बन्ध है। जब तक शरीर है सुख-दुःख की आँख-मिचौली चलती ही रहेगी। पूर्ण दुःख निवृत्ति तो मृत्यु के साथ ही संभव है।

"मरणमेव अपवर्गः"। मृत्यु ही मोक्ष है। दुःख मिश्रित होते हुये भी सुख को ही जीवन का अमीष्ट स्वीकार किया जाना चाहिये। स्त्री आदि के आलिगंनादि से उत्पन्न सुख ही पुरूषार्थ है (दूसरा कुछ पुरुषार्थ नहीं) ऐसा नही समझना चाहिये कि दुःख से मिला-जुला होने के कारण सुख पुरुषार्थ नही है क्योंकि हम लोग (सुख के साथ) अनिवार्य रूप से मिले-जुले दुःख को हटाकर केवल सुख का ही उपभोग कर सकते है। ऐसा कोई सुख संसार मे नही जो केवल सुख ही हो दुःख नहीं। वस्तुतः संसार के सभी सुख, दुःखो से युक्त होते है। ऐसा देखकर भी सुख को पुरूषार्थ समझना चाहिये क्योंकि सुख, दुःख से भरी वस्तु से दुःख को हटाकर केवल सुख का ही आनंद लिया जा सकता है। जैसे-मछली चाहने वाले व्यक्ति छिलके-और कँाटो के साथ ही मछलियो को पकड़ता है, उसे जितने की आवश्यकता है उतना (अंश) लेकर हट जाता है और जिस प्रकार धान को चाहने वाला व्यक्ति पुआल के साथ ही घान ले आता है जितना उसे लेना चाहिये उतना लेकर हट जाता है इसलिये दुःख के भय से (मन के) अनुकूल लगने वाले सुख को छोड़ना ठीक नही है।

NOTES

4.3.4 चार्वाक मत-संग्रह

यदि हम चार्वाक दर्शन के तत्वमीमांसीय, और नैतिक विचारों को सार रूप में व्यक्त करना चाहें तो हम कह सकते हैं कि तत्वमीमांसा के क्षेत्र में चार्वाक केवल प्रत्यक्ष की ही सत्ता स्वीकार करते हैं। वे सत्तायें जिनकी प्रत्यक्ष अनुभूति नहीं हो सकती या जो इन्द्रिय गोचर नहीं है-आत्मा, ईश्वर, मोक्ष, परलोक, स्वर्ग आदि ऐसी सत्ताओं के अस्तित्व को बिल्कुल स्वीकार नहीं किया जा सकता है। ये सब कोरी कल्पनायें हैं। केवल जड़ तत्व की ही वास्तविक सत्ता है। संसार के निर्माण के लिये किसी सृष्टिकर्ता ईश्वर को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। संसार का निर्माण पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के परमाणुओं के स्वभावतः मिलन से होता है। विश्व में कहीं पर भी प्रयोजनशीलता या उद्देश्यपरकता नहीं है सम्पूर्ण सृष्टि जड़ परमाणुओं के आकस्मिक मिलन/खेल का परिणाम है।

NOTES

जहाँ तक चार्वाक के नैतिक विचारों का प्रश्न है परलोक, मोक्ष, अदृष्ट, कर्मफल का अधिष्ठाता ईश्वर आदि किसी की भी सत्ता स्वीकार न करने के कारण वे नैतिक जीवन का लक्ष्य वत्रमान जीवन को ही सुखमय बनाना मानते है। स्त्री के आलिगंन से उत्पन्न सुख ही पुरुषार्थ का लक्षण है। काँटे इत्यादि (गड़ने की) पीड़ा से उत्पन्न दुःख ही नरक कहलाता है। संसार के द्वारा माना गया राजा ही परमेश्वर है दूसरा कोई नहीं। देह का नाश ही मुक्ति है। ज्ञान से मुक्ति नही होती। जड़ परमाणुओं के आकस्मिक संयोग से चेतना की उत्पत्ति उसी तरह से स्वतः हो जाती है जैसे किण्वादि द्रव्यों के मिलने से यदशक्ति (निकलती) है। मै मोटा हूँ, मै पतला हूँ इस प्रकार (दोनों के) एक आधार होने के कारण तथा मोटाई आदि से संयोग होने के कारण देह ही आत्मा है दूसरा कोई नही। 'मेरा शरीर' यह उक्ति आलंकारिक है।

4.3.5 प्रमाण विचार-प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण

याथार्थ ज्ञान को ही प्रमा कहा जाता है। यथार्थ ज्ञान की उत्पत्ति जिन साधनों से होती है उसे ही प्रमाण कहा जाता है। यद्यपि भारतीय दर्शन में प्रमाणों की सँख्या बहुत ज्यादा है परन्तु चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है। प्रत्यक्ष के द्वारा जो भी ज्ञान प्राप्त होता है वह विश्वसनीय और सच्चा होता है। प्रत्यक्ष के द्वारा प्राप्त ज्ञान में शंका या तर्क के लिये कोई स्थान नही होता है। अतः प्रत्यक्ष निर्विवाद रूप से याथर्थ ज्ञान है। मानव संरचना में मनुष्य को पाँच प्रकार की ज्ञानेन्द्रियाँ प्राप्त है जिनके द्वारा वह वाह्य भौतिक संसार का ज्ञान प्राप्त करता है। दृश्येन्द्रिय का तात्पर्य आँख से है जिसके द्वारा मनुष्य के रूप ज्ञान की प्राप्ति होती है। आँख के द्वारा हम वस्तुओं के रूप, रंग एवं आकार की जानकारी प्राप्त करते हैं। कर्णेन्द्रिय से तात्पर्य कान से है जिसका विषय शब्द है। इससे हम श्रवण या सुनने को कार्य करते है। इस प्रकार शब्द ज्ञान के माध्यम से हमें वस्तुओं का जो ज्ञान प्राप्त होता है वह कर्णोन्द्रिय (कान) के माध्यम से होता है। नासिका या नाक को घ्राणेन्द्रिय कहा जाता है जिसका विषय गन्ध है। वस्तुओं के गन्ध के माध्यम से हम उनकी जानकारी प्राप्त करते है।

स्पर्शेन्द्रिय का अर्थ त्वचा से है। जैसे ही कोई वस्तु अथवा पदार्थ त्वचा के सम्पर्क में आता है-व्यक्ति उससे सम्बन्धित कठोरता, कोमलता आदि का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। जिह्वा स्वादेन्द्रिय के रूप मे जानी जाती है कोई खाद्य मीठी है, खट्टी है, कसैली है, नमकीन है, उष्ण है, शीत है अथवा शीतोष्ण इसकी जानकारी हम अपनी जिह्वा से प्राप्त करते है। इस प्रकार पंच ज्ञानेन्द्रिय गम्य जगत की ही सत्ता है। जिन पदार्थो, वस्तुओं का ज्ञान पंच ज्ञानेन्द्रियां से नही प्राप्त किया जा सकता उनका कोई आस्तित्व नही है। इस प्रकार अतीन्द्रिय सत्ताये ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, स्वर्ग आदि का आस्तित्व मानना कोरी कल्पना है। वस्तुतः हमारे ज्ञान का संसार केवल प्रत्यक्ष तक ही सीमित है।

4.3.6 अनुमान प्रमाण का खंडन

चार्वाक दर्शन में अनुमान को प्रमाण नही माना गया है क्योंकि इसके द्वारा निश्चयात्मक ज्ञान की प्राप्ति नही हो सकती है। अनुमान का कारण है व्याप्ति ज्ञान। अतः व्यप्ति ज्ञान के निःसन्देह होने पर ही अनुमान निश्चयात्मक हो सकता है। घूमें और आग में यदि व्याक्ति ज्ञान का निश्चय ही जाय तमी धूआँ देखकर आग का अनुमान किया जा सकता है।

किसी भी प्रमाण से धूये और आग के व्याप्ति सम्बन्ध का निश्चय संभव नही हो सकता संसार के समस्त धूममय और अग्निमय पदार्थो के व्याप्ति सम्बन्ध का ज्ञान हमें प्राप्त नही हो सकता है अतः प्रत्यक्ष से व्याप्ति का निश्चय नही किया जा सकता। भूत और भविष्य में सभी धूम और अग्नि के सहचर्य सम्बन्ध का निश्चय करना तो असम्भव ही है। इस प्रकार यह सिद्ध है कि प्रत्यक्ष के द्वारा तो व्यप्ति स्थापना संभव नही। अनुमान के द्वारा तो व्याप्ति स्थापना की बात सोची भी नही जा सकती क्योकि अनुमान स्वयं व्याप्ति पर निर्भर है। अनुमान व्याप्ति पर आश्रित है और व्याप्ति अनुमान पर आश्रित। इस प्रकार दोनों एक दूसरे पर आश्रित हुये। फिर तो यह अन्योन्याश्रय दोष हुआ। व्याप्ति की स्थापना हम शब्द के द्वारा भी नही कर सकते क्योकि शाब्दिक प्रमाण भी अनुमान के द्वारा ही सिद्ध होता है। दूसरी बात है कि यदि अनुमान सदा शब्द

प्रमाण पर ही निर्भन हो तो फिर कोई भी व्यक्ति अपने आप से अनुमान नही कर सकता। उसे सर्वदा किसी विश्वासपात्र व्यक्ति पर निर्भर करना होगा।

NOTES

यहाँ एक प्रश्न यह पैदा होता है कि यह बात सत्य है कि हम संसार के समस्त धूममय और अग्निमय पदार्थों को नही देख सकते परन्तु उनके सामान्य धर्म अर्थात् धूमत्व और वहित्व को तो अवश्य देख सकते हैं। ऐसी स्थिाति में बिना समस्त धूममय और अग्निमय पदार्थों को देखे हम व्याप्ति स्थापना में सफल हो सकते है। चार्वाक इस युक्ति का भी खंडन करते हैं। वस्तुत प्रत्यक्ष के द्वारा धूमत्व का ज्ञान संभव ही नही है। धूमत्व तो एक जाति या सामान्य है जो सभी धूमवान पदार्थो मे वत्रमान है। अतः जब तक सभी धूमवान पदार्थों का प्रत्यक्ष न हो तब तक उनके सामान्य का ज्ञान नही हो सकता। किन्तु सभी धूमवान पदार्थो का प्रत्यक्ष संभव ही नही। अतः धूमत्व केवल उन धूमवान पदार्थों का सामान्य समझा जायेगा। जिन्हें हमने देखा है। स्पष्ट है कुछ व्यक्तियों को देखकर व्याप्ति ज्ञान नही हो सकता।

यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि यदि संसार में कोई निश्चित सर्वव्यापक नियम नही है तो सांसारिक वस्तुओं मे नियमितता क्यों पायी जाती है? आग सदा गर्म क्यों रहती है और जल सदा शीतल क्यों रहता हैं? चार्वाक मतानुसार यह वस्तुओं का स्वभाव है। वस्तुओं के प्रत्यक्ष धर्म को समझने के लिये किसी अप्रत्यक्ष नियम की कल्पना करना अनावश्यक है। यह सर्वथा अनिश्चित है कि वस्तुओं मे जो नियम अतीत मे पाया गया है वह भविष्य में भी पाया जायेगा। अगर यह प्रश्न उठाया जाय कि क्या धूये और अग्नि का व्याप्ति सम्बन्ध कार्य-कारण नियम के आधार पर स्थापित नही किया जा सकता क्या तो चार्वाक तुरंत कह पड़ेगे-कार्यकारण सम्बन्ध भी एक व्यत्ति है अतः इसकी स्थापना भी उपर्युक्त कठिनाइयों के कारण संभव नही।

यह बात सत्य है कि अनुमान के आधार पर दैनिक व्यवाहारिक जीवन में हम अपना कार्य सम्पादित करते रहते है और प्रायः वे (संयोगवश सत्य भी होते रहते हैं परन्तु इस काकतालीय स्थिति के आधार पर किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना मूर्खतापूर्ण है।

4.3.7 शब्द प्रमाण का खण्डन

NOTES

अनुमान प्रमाण के खण्डन के साथ ही चार्वाक शब्द को भी प्रमाण नही मानते हैं चार्वाक के अनुसार शब्द का अस्तित्व अनुमान से पृथक् नहीं क्योंकि शब्दगत अर्थ का ही अनुमान होता है। अर्थ का प्रत्यक्ष भाव नही होता अतः शब्द अनुमान मे ही सन्निविष्ट है। यदि शब्द प्रमाण को अनुमान अन्तगत्र न भी माना जाय तो भी शब्द निर्दोषप्रमाण सिद्व नही होता। तथाकथित शब्द प्रमाण से मिथ्या ज्ञान प्राप्त होता। अनेक व्यक्तियों को वेद में पूरा विश्वास है यहाँ तक कि वे वेद को अपौरूषेय मानते हुये उसे पूर्ण निर्भ्रान्त और सत्य मान लेते हैं परन्तु वास्तव में वेद क्या है? वेद तो उन धूत्र पुरोहितों के कृत्य है जिन्होंने अज्ञान तथा विश्वासपरायण मनुष्यों को धोखे में डालकर अपनी जीविका का प्रबन्ध किया है। इन पुरोहितों ने झूठी-झूठी आशायें तथा झूठे-झूठे प्रलोभन देकर मनुष्यों को वैदिक कर्म के अनुसार चलने को प्रेरित किया है। इन कर्मों से लाभ केवल पुरोहितों को होता है।

यहाँ पर व्यावहारिक जीवन से जुड़ा हुआ एक प्रश्न यह है कि यदि हम विश्वासपात्र व्यक्तियें की बातों पर भी विश्वास नही करेगें; धर्मगुरुओं की ऋषियों-मुनियों द्वारा साक्षात्कार किये गये सत्य पर भी विश्वास नही करेगें तो क्या हमारा ज्ञान अत्यन्त संकुचित नही हो जायेगा। क्या हम मात्र इन्द्रिय संवेदनों तक ही सीमित नही रह जायेंगे? प्रत्युत्तर में चार्वाक कहते है कि आस्था और विश्वास व्यक्तिगत जिन्दगी का विषय है इसमें अनिवार्यता और सार्वभौमिकता का अभाव होता है। तर्क के क्षेत्र (दर्शन में) धार्मिक वैयाक्तिक आस्थाओं का कोई मूल्य नहीं। शब्द प्रमाण भी एक प्रकार से अनुमान प्रमाण ही होता है। इसकी अनुमान प्रणाली निम्नानुसार स्थापित की जा सकती है-

सभी विश्वासयोग्य व्यक्तियों के वाक्य मान्य है।

यह विश्वासयोग्य व्यक्ति का वाक्य है।

अतः यह मान्य है।

NOTES

स्पष्ट है शब्द प्रमाण भी अनुमानवत कार्य करता है। अतः शब्द की प्रामाणिकता उसी प्रकार अस्वीकार्य है जैसे अनुमान प्रमाण की। अनुमान की तरह हम शब्द भी विश्वास योग्य मानकर उसके अनुसार अपना कार्य करते है और प्रायः हमें सफलता भी मिलती रहती है किन्तु कई बार हम सफलता से वंचित भी हो जाते हैं अतः शब्द ज्ञान प्राप्ति का यथार्थ और निर्भर योग्य साधन नही माना जा सकता।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों एवं तर्कों के आलोक में चार्वाक दार्शनिक अनुमान एवं शब्द प्रमाण का खण्डन करते हुये प्रत्यक्ष को ही एकमात्र प्रमाण मानते है।

4.3.8 लौकिक व्यवहार और वस्तुयें

यहाँ पर एक प्रश्न और उसका चार्वाकीय निराकरण भी आवश्यक है। प्रश्न लौकिक व्यवहार और वस्तुओं से जुड़ा हुआ है। यदि कर्मफल का सिद्धान्त नहीं है कार्यकारण नियम भी संदिग्ध है तो हमारा लौकिक व्यवहार कैसे संचालित होता है। वैयाक्तिक और सामाजिक जीवन में नैतिकता की स्थापना या नैतिक व्यवस्था मे विश्वास कैसे किया जा सकता है। कुछ लोगों के अनुसार अच्छे और बुरे कर्मों से उत्पन्न पुण्य और पाप के रूप में अदृष्ट रहता है वही ऐश्वर्य देता है या रोग उत्पन्न करता है। इसे कर्मफल भी कहते है। ऐश्वर्यादि कार्यों को देखकर अदृष्ट कारण की सिद्धि होती है जैसे धूयें से अग्नि। किन्तु जब अनुमान मानते ही नही, ऐश्वर्यादि स्वाभाविक है तब अदृष्ट रूपी कारण रहेगा। क्या खाकर? अब यदि प्रश्न करे कि अदृष्ट यदि नही है तो संसार की विचत्रता की व्याख्या कैसे की जायेगी? क्या कारण है कि आग हमेशा उष्णता प्रदान करती है जबकि जल शीतलता। चार्वाक दार्शनिक इसका उत्तर 'स्वभाववाद' सिद्धान्त से देते है। सृष्टि का यह स्वभाव ही है कि वह अनेक विषमताओं व विचित्रताओं को वह स्वयं मे सिमेटे हुये है। अग्नि उष्ण है, जल शीतल है, वायु समशीतोष्ण है। यह सब विचित्रता किसने की? अपनी-अपनी प्रकृति से ही इनकी व्यवस्था हुई है। इसके लिये किसी अदृष्ट सत्ता को मानने की आवश्यकता नही है।

NOTES

चार्वाक के उक्त विचारो को उनके लौकिक व्यवहार पर भी प्रभाव पड़ा है। अतीन्द्रिय वस्तुओं ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, परलोक की प्राप्ति और सिद्धी के स्थान पर वे जीवन में इहलोकवादी और सुखवादी हो गये। सुख की प्राप्ति ही जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है वह भी अदृष्ट अतीन्द्रिय सुख नहीं। ऐहिक सुख की प्राप्ति ही जीवन को चरम लक्ष्य है। इस परम्परा में स्वेच्छाचार और कामाचार को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है। इस मत के अनुसार पाँच इन्द्रियों की सेवा या विषयभोग के द्वारा ही मनुष्य अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है अतः काम ही एकमात्र पुरूषार्थ है। अर्थ, काम का सहायक होने के कारण अतिरिक्त या सहायक पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इस सम्प्रदाय में भोजन पान और भोग के लिये पूर्ण प्रोत्साहन और स्वच्छन्दता है "हे सुन्दरी! जो चाहो खाओ और जो चाहो पीओ। हे कोमलांगी! जो अतीत हो गया वह पुनः आने को नही। पूर्ण स्वतन्त्र होकर सुख का उपभोग करना ही बुद्धिमानी है।"

4.3.9 चार्वाक मत सार

वैसे तो प्रस्तुत इकाई में चार्वाक दर्शन के विविध पक्षों का सविस्तार विवेचन किया जा चुका है तथापि पाठकगण एक ही स्थान पर चार्वाक दर्शन की सम्पूर्ण झलकियाँ प्राप्त कर सकें, इस हेतु प्रस्तुत स्थल पर चार्वाक दर्शन के महत्वपूर्ण आयामों का विवेचन 'चार्वाक मत सार' शीर्षक के अन्तर्गत सर्व दर्शन संग्रह ग्रन्थ के आधार पर किया जा रहा है।

न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः
नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकः।।

वृहस्पति ने भी यह सब कहा है न तो स्वर्ग है, न अपवर्ग (मोक्ष) और न परलोक मे रहने वाली आत्मा, वर्ण आश्रम आदि की क्रियायें भी फल देने वाली नही है।

अग्निघेत्र, तीनों वेद, तीन दण्ड धारण करना और भस्म लगाना-ये बुद्धि और पुरुषार्थ से रहित लोगों की जीविका के साघन हैं जिन्हें ब्रह्मा ने बनाया है।

मृतानामपि जन्तूनां श्राद्धं चेन्तृप्तिकारणम्
निर्वाणस्य प्रदीपस्य स्नेहः संवर्धयेच्छिखाम्।।

NOTES

यदि ज्योतिष्टोम-यज्ञ मे मारा गया पशु स्वर्ग जायेगा तो उस जगह पर यजमान आपने पिता को ही क्यों नहीं मार डालता। मरे हुये प्राणियें को श्राद्ध से यदि तृप्ति मिले ता बुझे हुये दीपक की शिखा को तो तेल अवश्य ही बढ़ा देगा।

(विदेश) जाने वाले लोगों के लिये पाथेय (मार्ग का भोजन) देना व्यर्थ है, घर मे किये गये श्राद्ध से ही रास्ते में तृप्ति मिल जायेगी।

स्वर्ग में स्थित (पित्रृगण) यदि यहाँ दान कर देने से तृत्त हो जाते हैं तो महल के ऊपर (कोठे पर) बैठे हुये लोगों को यहीं पर क्यों नही दे देते है?

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा धृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः?
यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष विनिर्गतः।
कस्यात् भूयो न चायाति बन्धुस्नेहसमाकुल?

जब तक जीना है सुख से जीना चाहिये, ऋण लेकर भी घी पीना चाहिये (विलास करें) क्योकिं (मरने पर) भस्म के रूप मे परिणत शरीर फिर (संसार मे ऋण शोध के लिये) कैसे आ सकता है?

(यदि आत्मा शरीर से पृथक् है और) शरीर से निकलकर दूसरे लोक में चला जाता है तब बन्धुओं के प्रेम से व्याकुल होकर लौट क्यों नहीं जाता।

इसलिये ब्राहमणों के द्वारा बनाया हुआ यह जीविकोपाय है-मृत व्यक्तियों के सारे मरणोन्तर कार्य इसके अतिरिक्त ये सब कुछ नही हैं। वेद के रचयिता तीन है-भॉड, धूत्र (ठग) और राक्षस। जर्मरी तुर्फरी आदि पण्डितों की वाणी समझी जाती है।

अश्वस्यात्र हि शिश्नं तु पत्नीग्राह्यं प्रकीत्रितम्
भाण्डैस्तद्त्परं चैव ग्राह्य जातं प्रकीत्रितम् ।।
मांसानां खादनं तद् निशाचर समीरितम्।।

इस (अवश्मेघ) में घोड़े के लिगं को पत्नी द्वारा ग्रहण कराने का विधान है-यह सब ग्रहण कराने का विधान भाड़ो का कहा हुआ हैं (यज्ञ में) मांस खाना भी राक्षसों (मांस के प्रेमियों) का कहा हुआ है। इसलिये बहुत से प्राणियों के कल्याण के लिये चार्वाकमत का आश्रय लेना चाहिये।

सारांश

NOTES

चार्वाक दर्शन लोकयत दर्शन है। खाने-पीने तथा प्रिय लगने वाली बातों का प्रचार करने के कारण इस दर्शन को काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। लोक (संसार) में फैले होने (प्रसारित) के कारण इसे 'लोकायत दर्शन' कहा जाता है। देवताओं के गुरू वृहस्पति द्वारा प्रणीत होने के कारण यह दर्शन 'बार्हस्पत्य दर्शन' भी कहलाता है। ईश्वर और वेदों के प्रामाण्य का सर्वथा खण्डन करने के कारण यह 'नास्तिक दर्शन' भी कहलाता है। परम तत्व को जड़ या भौतिक मानने के कारण यह जड़वादी या भौतिकवादी दर्शन भी कहलाता है। चार्वाक प्रत्याक्ष को ही प्रमाण मानने के कारण पृथ्वी, जल, अग्नि, और वायु इन चार तत्वों की ही सत्ता स्वीकार करते है। अकाश के अस्तित्व को चार्वाक नहीं मानते है। चार्वाक दर्शन का तत्वमीमांसा सम्बन्धी विचार स्वभाववादी (Naturalistic) माना गया है क्योंकि चार्वाकों के मतानुसार जड़ परमाणुओं पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के संयोग से स्वभावतः सृष्टि होती है। जीवन में केवल सुख को ही पुरुषार्थ मानने वाले चार्वाक का आचार शास्त्र सम्बन्धी दृष्टिकोण सुखवादी माना गया है।

जहाँ तक चार्वाक दर्शन की ज्ञानमीमांसा का प्रश्न है, चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं। जिन वस्तुओं या सत्ताओं का ज्ञान इन्द्रिय प्रत्यक्ष से नहीं प्रात्त किया जा सकता उनका कोई अस्तित्व नहीं है। इस प्रकार चार्वाक ईश्वर, आत्मा, मोक्ष जैसी अतीन्द्रिय वस्तुओं की सत्ता नहीं स्वीकार करते हैं। जीवन को उद्देश्य अधिकाधिक मात्रा में वत्रमानकालिक शारीरिक सुख प्रात्त करना है।

शब्दावली

तत्वमींमांसा : दर्शनशास्त्र की वह शाखा जिसमें परमतत्व को स्वरूप उनकी संख्या तथा जगत के साथ उसके सम्बन्धों का निरूपण किया जाता है।

ज्ञानमीमांसा : दर्शनशास्त्र की वह शाखा जिसमें ज्ञान की उत्पत्ति, प्रामाण्य और सीमा विचार किया जाता है।

आस्तिक दर्शन : भारतवर्ष मे उत्पन्न वे दर्शन सम्प्रदाय जो वेदों को प्रमाण मानते है। आस्तिक कहलाते है।

NOTES

नास्तिक दर्शन : वे दर्शन सम्प्रदाय जो वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास नहीं करते है। नास्तिक दर्शन तीन है- चार्वाक, जैन और बौद्ध।

षड्दर्शन : सम्पूर्ण आस्तिक दर्शनों की संख्या 06 है- न्याय, वैशेषिक, साँख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त। इनकी कुल संख्या 06 है अतः ये षड्दर्शन कहलाते हैं।

अतीन्द्रिय : वे वस्तुयें या सत्तायें जिनका ज्ञान इन्द्रियों से नही प्राप्त किया जा सकता या जिन सत्ताओं तक ज्ञानेन्द्रियों-आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा की पहुँच नही है। अतीन्द्रिय सत्ताये कहलाती हैं। प्रायः ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, परलोक स्वर्ग आदि सत्तायें अतीन्द्रिय मान जाती है।

सूची प्रश्न

1. चार्वाक दर्शन के लोकायतिक नामकरण की व्याख्या कीजिए।
2. चार्वाक के ईश्वर सम्बन्धी विचारों की व्याख्या कीजिए।
3. चार्वाक दर्शन के मोक्ष एवं आत्मा सम्बन्धी अवधारणा का निरूपण कीजिए।
4. चार्वाक मत संग्रह पर एक समीक्षात्मक लेख लिखिये।
5. प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है। चार्वाक दर्शन के इस मत की समीक्षा कीजिये।
6. चार्वाक अनुमान प्रमाण का खण्डन कैसे करते हैं? निरूपण कीजिये।
7. चार्वाक शब्द प्रमाण को स्वीकार नहीं करते है। इस तथ्य की व्याख्या कीजिए।
8. लौकिक व्यवहार और वस्तुओं के सम्बन्ध में चार्वाकमत का मूल्यांकन कीजिए।

प्रदत्त कार्य

1. चार्वाक के आत्मा एवं मोक्ष सम्बन्धी विचारों का लोक जीवन पर पड़े प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए।
2. चार्वाक के नैतिक विचारों की व्याख्या कीजिए। क्या जड़वाद को स्वीकार करते हुये भी नैतिक जीवन व्यतीत किया जा सकता है? स्वमत का निरूपण कीजिए।

3. संसार का निर्माण चतुर्भूतों के स्वाभाविक संयोग से हुआ है। चार्वाक के इस मत की व्याख्या कीजिए।

NOTES

उपयोगी ग्रन्थ

1 प्रो0 नन्दकिशोर देवराज : भारतीय दर्शन

2 प्रो0 बद्रीनारायण सिहं : भारतीय दर्शन

3 उमा शंकर शर्मा ''ऋषि'' भाण्यकार -सर्वदर्शन संग्रह